है, जिससे वह कर्मानुसार सुख-दुःख भोगता है। इस प्राकृत-जगत् में जीवों की सब अभिव्यक्तियों के कारण श्रीभगवान् ही हैं।

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता।।४।।

सर्वयोनिषु=सब योनियों में; **कौन्तेय**=हे अर्जुन; **मूर्तयः**=तनु (शरीर); **सम्भवन्ति**=उत्पन्न होते हैं; **याः**=जो; **तासाम्**=उनकी; **ब्रह्म महत्**=महद्ब्रह्म नामक प्रकृति; **योनिः**=उत्पत्ति का स्थान है; **अहम्**=मैं; **बीजप्रदः**=गर्भाधान करने वाला; **पिता**=पिता हूँ।

अनुवाद

हे अर्जुन! सब प्रकार की योनियों में जितने भी शरीर उत्पन्न होते हैं, उन सब की महद्ब्रह्म प्रकृति तो उत्पत्ति का स्थान, अर्थात् माता है और मैं बीज का गर्भाधान करने वाला पिता हूँ।।४।।

तात्पर्य

इस श्लोक से स्पष्ट है कि भगवान् श्रीकृष्ण सब जीवों के आदिपिता हैं। प्राकृत-जगत् में जीवों की अभिव्यक्ति अपरा और परा प्रकृति के संयोग से होती है। ये जीव इस लोक में ही हों, ऐसा नहीं; संसार के सर्वोपरि लोक—ब्रह्मलोक तक ये पाए जाते हैं। जीव वस्तुतः सर्वव्यापक हैं—पृथ्वी में हैं, जल में हैं, और अग्नि में भी हैं। इन सब की अभिव्यक्ति प्रकृतिरूप माता में श्रीकृष्ण द्वारा गर्भाधान करने से होती है। तात्पर्य यह है कि प्रकृति में गर्भरूप से स्थापित जीव सृष्टि के समय पूर्वकर्म के अनुरूप शरीरों में अभिव्यक्त होते हैं।

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।।५।।

सत्त्वम्=सत्त्वगुण; **रजः**=रजोगुण; **तमः**=तमोगुण; **इति**=ऐसे; **गुणाः**=तीनों गुण; **प्रकृतिसम्भवाः**=प्रकृति से उत्पन्न होने वाले; **निबध्नन्ति**=बाँधते हैं; **महाबाहो**=हे महाबाहु अर्जुन; **देहे**=इस शरीर में; **देहिनम्**=जीवात्मा को; **अव्ययम्**=निर्विकार (सनातन)।

अनुवाद

हे अर्जुन! प्रकृति के सत्त्व, रज और तम—ये तीनों गुण प्रकृति के संग में स्थित निर्विकार जीवात्मा को देह में बाँधते हैं।।५।।

तात्पर्य

जीवात्मा दिव्यस्वरूप है, प्रकृति से उसका कोई संबंध नहीं। फिर भी, प्राकृत-जगत् में उपाधिग्रस्त हो जाने के कारण वह प्रकृति के गुणों के वशीभूत हुआ कर्म कर रहा है। जीवों को प्रकृति के विविध गुणों के अनुसार नाना प्रकार के शरीर